B.A. II Hindi Hons.

'हिंदी साहित्य में भक्ति का उदय और विकास' का संक्षेपण

डॉ० सतीश चन्द्र पाठक,
प्राध्यापक हिंदी विभाग
एस० एस० कॉलेज, जहानाबाद।

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने भक्ति आन्दोलन का श्रेय दक्षिण के आलवार संतों या भक्तों को दिया है। इनकी आधिकारिक संख्या बारह बतायी जाती है। संभवतः ये बारह भक्त समाज में प्रधान भक्त होंगे उनके अतिरिक्त इनके अनुयायियों की संख्या निश्चित रूप से बहुत अधिक रही होगी। इन भक्तों का समय ईसा पूर्व से ईसा की आठवीं या नौवीं शताब्दी तक का माना जाता है। इन्हीं भक्तों में एक आण्डाल नाम की भक्तिन हो गयी है जो कृष्ण की परम उपासिका थी और उन्हें ही अपना पति मानती थी। दाम्पत्य भाव की भक्ति में वह ऐसी लीन हुई कि स्वयं श्रीकृष्ण ने उसे अपने में समाहित कर लिया था। इन भक्तों ने भक्ति के भावात्मक पक्ष को अपनाया था। संभवतः भक्ति का सैद्धान्तिक पक्ष बहुत पहले से चला आ रहा होगा। दसवीं शताब्दी में एक आचार्य हुए नाथमुनि। उन्होंने भक्तिमार्ग को अपने अवदान से बहुत आसान बना दिया। उन्होंने वैष्णवों का संगठन किया, आलवार भक्तों के भक्ति गीतों का संग्रह कर लिपिबद्ध किया, मन्दिरों में कीर्तन एवं वैष्णव सिद्धान्तों की दार्शनिक व्याख्या की। इस प्रकार उन्होंने भक्ति आन्दोलन को एक मार्ग प्रदान किया। इन्हीं के उत्तराधिकारी रामानुजाचार्य हुए जिन्होंने विशिष्टाद्वैत की स्थापना की। उन्होंने भगवान विष्णु की उपासना की तथा दास्यभाव की भक्ति पर बल दिया। इन्हीं की परम्परा में रामानन्द हुए जिन्होंने राम को अवतार मान कर राम भक्ति का प्रवर्तन किया। आगे चलकर इसी सम्प्रदाय में तुलसीदास का आगमन हुआ जिन्होंने भगवान श्री राम में मर्यादापुरुषोत्तम की परिकल्पना कर शील, शक्ति एवं सौन्दर्य की स्थापना की।

दूसरी ओर द्वैतवाद के प्रवर्तक मध्वाचार्य, द्वैताद्वैतवाद के संस्थापक निम्बार्काचार्य और शुद्धाद्वैतवाद के प्रवर्तक वल्लभाचार्य हुए। इन लोगों ने लक्ष्मी और विष्णु की भक्ति पर जोर दिया वहीं निम्बार्काचार्य ने राधा-कृष्ण की भक्ति को प्रधानता दी। वल्लभाचार्य ने बालकृष्ण की भक्ति पर जोर दिया और पुष्टिमार्ग की स्थापना की। चैतन्य महाप्रभु ने चैतन्य सम्प्रदाय स्वामी हरिदास ने सखी सम्प्रदाय और हित हरिवंश ने राधा-वल्लभ सम्प्रदाय का प्रवर्तन किया। आगे चलकर इसी सम्प्रदाय में सूरदास का प्रादुर्भाव हुआ जो सच्चे अर्थों में भक्ति काल के सर्वोज्ज्वल रत्न हैं। इन्होंने अपने अंतः चक्षुओं से श्रीकृष्ण के मनोहर रूप का वर्णन किया है कि आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने लिखा है कि "सूरदास ने अपनी बंद आँखों से बाल हृदय का कोना-कोना झाँक लिया है"

भक्ति की इस वेगवती धारा के समानान्तर एक दूसरी धारा भी चल रही थी। मुसलमानों में स्पृश्यता और असमानता का अभाव था। इधर तत्कालीन बौद्ध सिद्धों और नाथ योगियों में भी बहुत कुछ यही स्थिति थी वे भी ब्राह्मण धर्म से बाहर आने के बाद जाति च्युत हो गये थे अतः उनमें भी धर्म का कोई बंधन नहीं था इन सिद्धों एवं योगियों ने ईश्वर को हर कण में उपस्थित बतलाया और बाह्य पूजा-पाठ को आडम्बर मानकर उसका निषेध किया यौगिक प्रक्रियाओं पर अधिक जोर दिया तथा शास्त्रों के ज्ञान को खोखला बतलाया। इसी सामाजिक चिन्तन ने संत मत की पूर्वपीठिका बनाई। इसी मार्ग में आगे चलकर महाकवि कबीर का जन्म हुआ जिन्होंने संत साहित्य को महान ऊँचाई प्रदान की।

उधर कुछ सूफी मुसलमानों ने हिन्दू घरों की प्रेम कहानी को आधार बनाकर ईश्वर के प्रेम स्वरूप का प्रचार किया। इससे दोनों सम्प्रदायों का आत्मीयपन मिला तथा दोनों में सांस्कृति आदान-प्रदान बढ़ा। जायसी इस काव्यधारा के प्रतिनिधि कवि हुए जिन्हें उच्च कोटि की सफलता प्राप्त हुई।

notes
Phone
email
website